an>

Title: Shri Rattan Lal Kataria called the attention of the Minister of Water Resources, River Development and Ganga Rajuvenation to the need to set up Saraswati Research Institute for revival of the river Saraswati.

**श्री रत्न लाल कटारिया (अम्बाला) :** महोदया, मैं जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा जीर्णोद्धार मंत्री का ध्यान अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विÂषय की ओर दिलाना चाहता हूँ और उनसे अनुरोध करता हूँ कि वे इस सम्बन्ध वक्तव्य दें।

"सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए सरस्वती विकास एवं अनुसंधान संस्थान का गठन किए जाने की आवश्यकता।"

**जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा जीर्णोद्धार मंत्री (सुश्री उमा भारती) :** माननीय अध्यक्ष महोदया, आपकी अनुमति हो तो मैं वक्तव्य दूं।

**माननीय अध्यक्ष :** जी।

**सुश्री उमा भारती :** माननीय सदस्य ने सरस्वती नदी के विलुप्त होने के विषय में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर सरकार का ध्यान आकर्Âि◌ात किया है। अन्य सदस्यों ने भी इस मामले में हमारे मंत्रालय से संपर्क करके अपने सुझाव दिए हैं। सरकार सभी संबंधित स्रोतों से सूचना मांग रही है। सूचना मिल जाने पर माननीय सदस्य को उससे अवगत करा दिया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सदन के सभी सदस्यों से अनुरोध करूंगी कि यदि उनके पास में सरस्वती नदी के बारे में कोई भी सूचना है, जो आम तौर पुरातन लोग होते हैं, उनके पास उसकी जानकारियां होती हैं, तो वह सूचना हमारे साथ साझा करने के लिए आमंत्रित हैं और वे उसे हमारी वेबसाइट पर भी भेज सकते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदया, आपके माध्यम से सदन से और आपसे भी अनुरोध करूंगी कि सरस्वती नदी जो विलुप्त हो गयी है, उसको हम किस प्रकार से खोज करके पुनर्जीवन प्रदान कर सकें, इस संबंध में कभी सदन भी हमें आपके माध्यम से मार्गदर्शन देना चाहे तो हम जरूर प्राप्त करना चाहेंगे।

**माननीय अध्यक्ष :** कटारिया जी, आप कुछ कहना चाहेंगे।

**श्री रत्न लाल कटारिया :** महोदया, मैं आपको नमन करता हूं कि आपने एक ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया जो हिंदुस्तान के करोड़ों दिलों में पिछले हजारों वर्षों से उठ रहा है। सरस्वती नदी जो कभी भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक हुआ करती थी। यह भारत की 6000 वर्ष से भी अधिक पुराने इतिहास से भी जुड़ी हुई है। जो विभिन्न रिसर्च हुई हैं उनसे यह बात उभर कर आई है कि सरस्वती नदी कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की जो संस्कृति थी, सरस्वती-इण्डस सभ्यता है, जो 5000-6000 साल पुरानी है, उस समय सरस्वती नदी हिमालय पर्वत से बहुत तीव्र गति से बहती थी। सतलुज और यमुना इसके साथ-साथ बहती थीं लेकिन प्रकृति में कुछ ऐसे प्रकोप आए जिनकी वजह से सरस्वती नदी लुप्त हो गई। आज मेरे लोक सभा क्षेत्र आदि बद्री में विभिन्न वैज्ञानिकों ने समय-समय पर रिसर्च किए हैं। श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार के समय में भी जगमोहन जी ने जो दिलचस्पी इस प्रोजेक्ट में ली। उस समय भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम जी भी आदि बद्री में एक प्रदर्शनी में गए थे। हरियाणा सरकार के राज्यपाल महोदय ने भी वहां पर जा कर उसमें दिलचस्पी दिखाई। हरियाण सरकार ने 10 करोड़ रुपए सरस्वती नदी की रिवाइवल के लिए मंजूर किया है। इसरो के वैज्ञानिकों ने जो तस्वीरें खींची हैं उनसे यह बात बिल्कुल सिद्ध हो चुकी है कि सरस्वती नदी आदि बद्री से होती हुई गुजरात तक पहुंची है। जोधपुर में खुदाई का कार्य हुआ, जहां पर 24 कुएं खोदे गए और उनमें से 22 कुओं में बहुत मीठा पानी मिला। भारत सरकार की पेट्रोलियम मिनिस्ट्री ने अपनी सी.एस.आर., जो लैबिलिटी थी, उसके अंतर्गत इस विषय को लिया और वहां पर ड्रिलिंग का काम हुआ। वहां पर 14 कुएं खोदे गए। वहां पर भी पानी की धारा का प्रवाह मिला।

मैडम स्पीकर, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से इस मामले में इंटरविन करने के लिए और यह इंश्योर करने के लिए रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि सरस्वती मां के रिवाइवल का जो केस है, it is not only relating to revival of the Saraswati Project. हमारी जो सर्च है, यह लॉस्ट ऑफ सरस्वती रिवर के बारे में है, सर्च ऑफ लॉस्ट सिविलाइजैंसंज हैं, सर्च फॉर लॉस्ट सिटिज है, जो शहर उस जमाने में बसा करते थे।

मैडम, माननीय मंत्री जी ने कहा है कि किसी भी माननीय सदस्य के पास अगर इस विषय में जानकारी है, मेरे पास इसके बारे में इतनी जानकारियां हैं कि मैं इस सदन में तीन घंटे तक इस संबंध में बोल सकता हूं, समय-समय पर सरस्वती नदी पर जो शोध हुई हैं, चाहे वे फ्रांस के आर्कोलॉजिस्ट्स, जर्मनी के ऑर्कोलॉजिस्ट्स या वे हिन्दुस्तान के आर्कोलॉजिस्ट्स थे, समय-समय पर सबने अपनी फाइण्डिंग्स दी हैं और यह सिद्ध किया था कि कुछ लोगों ने भ्रम पैदा किया था कि यह एक कल्पना है, लेकिन वैज्ञानिक आधार पर यह साबित हो चुका है कि सरस्वती नदी भारतवर्ष में बहती थी और इसके लिए मैंने सरस्वती विकास अथॉरिटी गठन की मांग की है। मैं आपसे यह मांग कर रहा हूं कि भारत माता के लाल, जन नायक नरेन्द्र मोदी जी ने अपनी चुनाव सभा में, 3 अप्रैल को कुरुक्षेत्र की पावन धरती पर यह घोषणा की थी कि अगर एन.डी.ए. की सरकार बनती है तो मैं मां सरस्वती के प्रोजेक्ट को आदि बद्री से ले कर गुजरात तक, इसकी रिवाइवल के लिए काम करूंगा। गंगा, यमुना और सरस्वती आपस में जब मिलती हैं तो एक संस्कृति का निर्माण होता है।

मैडम स्पीकर, मैं आपसे अनुरोध कर रहा हूं कि मैं माननीय मंत्री जी से अनुरोध कर रहा हूं कि जब आप, माननीय मंत्री जी और भारत के प्रधान मंत्री जी, आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी, तीनों मिल कर भारत की इस प्राचीन संस्कृति की ओर ध्यान देंगे तो इस कार्य में जरूर प्रगति होगी और सरस्वती मां का जल फिर से भारत के अंदर बहेगा। यह टूरिज्म और भारत की बहुत-सी संस्कृति के लिए महान कार्य होगा।

**माननीय अध्यक्ष :** उज्जैन के डा. वाकन्कर जी ने कुछ संशोधन किए हैं। आप उन्हें भी देख सकती हैं।

â€¦(व्यवधान)

**डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार):** अध्यक्ष महोदया, हिमालय से गंगा, यमुना, सरस्वती और...(व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** उन्होंने सुझाव के बारे में कहा है। अगर आपके पास जानकारी हो तो दे दीजिए। मैंने दे दी है, आप भी दे दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

**सुश्री उमा भारती :** माननीय अध्यक्ष महोदया, सरस्वती जी के बारे में माननीय सदस्य कटारिया जी ने जो कहा है, वह सच्चाई है कि अब सरस्वती नदी पौराणिक गाथाओं की बात नहीं है। उसके होने के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण मिल चुके हैं। इसमें सर्वाधिक गंभीरता से यदि किसी स्थान पर काम हुआ है तो वह गुजरात में हुआ है। वर्तमान प्रधान मंत्री और उस समय के गुजरात के मुख्य मंत्री

नरेन्द्र भाई मोदी जी ने सरस्वती नदी का जो पुराना परम्परागत रूट था, उसे साइंटीफिक मैथड से उसमें नर्मदा जी का जल छोड़कर एक प्रकार से उसके अस्तित्व को पुनर्जीवित करने का कार्य किया। वर्तमान की जो स्थितियां हैं, यह सदन का वह समय है जिसमें इस पर विस्तार से चर्चा नहीं हो सकती, लेकिन हिमालय में सरस्वती के जो उदगम हुए, एक सरस्वती निकली और अलकनंदा में समा गई, वह सरस्वती बद्रीनाथ में दिखती है। एक सरस्वती निकली और केदारनाथ में मंदाकिनी में समा गई। एक सरस्वती की वह धारा है जो किसी ग्लेशियर से निकली है और बाद में उत्तराखंड क्रॉस करके हरियाणा से होती हुई गुजरात, राजस्थान से होती हुई अंत में त्रिवेणी में समाई। त्रिवेणी संगम से ठीक पहले आर्मी के पास इलाहाबाद का जो किला है, उसमें एक सरस्वती कूप मिलता है। उसे आज भी लोग सरस्वती कूप मानते हैं। जल संसाधन विभाग ने यह काम ग्राउंड वाटर रीचार्ज करके हमारी एक स्वायत्तशासी संस्था को दिया है। हमने उन्हें कहा है कि आप सारी जानकारियों को एकत्रित कीजिए। माननीय सदस्य ने जो कहा है, भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी का यह सपना है, उनकी इच्छा है और यह इच्छा पूरे विश्व के लोगों की है। सरस्वती थी, इसके वैज्ञानिक प्रमाण हैं। यह हमारी भी इच्छा है और हमारे मंत्रालय ने इसे बहुत गंभीरता से लिया है। इसलिए मैं आपके माध्यम से पूरे सदन को आश्वस्त करती हूं कि हमारे मंत्रालय ने इसे इतनी गंभीरता से लिया कि हमने ग्राउंड वाटर रीचार्ज को यह काम दिया कि आप ढूंढिए कि कहां से वह लुप्त हुई। अब किस प्रकार उस मार्ग पर कूपों का खनन करके उस जल को मिलाकर जो अभी इलाहाबाद में सरस्वती नदी के कूप में मिलता है, अगर हम उसके 25 प्रतिशत गुण भी मिला सकें तो निश्चित रूप से विश्वास कर सकेंगे कि यही सरस्वती नदी का रूट है। इसमें हम बहुत गंभीर हैं। हमारे प्रधान मंत्री जी ने ही यह प्रयोग गुजरात में मुख्य मंत्री के रूप में किया। माननीय सदस्य ने जो इच्छा व्यक्त की है, मुझे पता है, यह पूरे सदन की इच्छा है। माननीय अध्यक्ष महोदया, स्वयं आपने भी अभी इस बारे में मेरा मार्गदर्शन किया है। हम अपने तरीके से कर रहे हैं कि इसमें जो मार्गदर्शन संभव हो, वह हो। हम अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ेंगे कि सरस्वती नदी के रूट को खोज निकालें।...(व्यवधान)

**श्री रत्न लाल कटारिया :** अध्यक्ष महोदया, मेरे पास जो जानकारी है, वह मैं मंत्री जी को हैंड ओवर कर दूं या आपको दे दूं।...(व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** आप रख दें या दे दीजिए, जैसी आपकी इच्छा हो।

[Placed in Library. See No. LT 724/16/14]